हज गौड सचित्र

लेखक

अब्दुल खादर, तोनसे

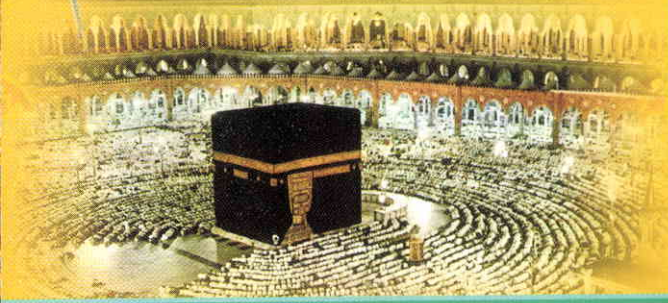

طبع على نفقة الفقير إلى عفو الله ورضاه غفر الله له ولوالديه ولأهله ولأولاده وللمسلمين

هذا الكتاب وقف لله تعالى يوزع مجانا ولايباع

دليل
الحج والعمرة والزيارة

ترجمة وإعداد
عبد القادر عثمان تونس
اللغة الهندية

	محتويات هذه الكتيب :-
١	مقدمـــة :
٢	خريطة مشاعر الحرام
٣	كيفية أداء العمرة
٤	خريطة منطقة الحرام والميقات
٥	كيفية أداء الحج
٦	تخطيط الكعبة والصفاء والمروة
٧	جدول مشاعر الحرام
٨	التوجيهات اللازمة
٩	خريطة مشاعر الحرام
١٠	زيارة المسجد النبوي في المدينة المنورة

दुआ करना मना है। ज़ियारत कब्र रसूल (स) हज के कार्य विधियों में शामिल नहीं।

4. तवाफ के (कअबः) चक्करों की कोई खास दुआ नहीं है। सिर्फ रुक्न यमानि और हजर-असवद के दरमियान यह दुआ पढ़ना सुन्नत है:- "रब्बना आतिना फिद्दुन्या हसनः व फिल आखिरति हसनः व किना अज़ाबन्नार"।

5. सफा-मर्वा के हर चक्कर से पहले तीन बार "अल्लाहु अकबर" कह कर यह दुआ पढ़ना सुन्नत है। "ला इलाह इल्लल्लाहु वहदहु ला शरीक लह, लहुल मुल्कु व लहुल हम्दु युही व युमीतुव हुव अला कुल्लि शयिन कदीर। ला इलाह इल्लल्लाहु वहदहु अंजज़ वअदहु व नसर अब्दहु व हज़मल अहज़ाब वहदह"। इसके अलावा सफा मर्वा की कोई खास दुआ नहीं है।

6. सिर के आगे या पीछे से चंद बाल कटवाना काफि नहीं। पूरे सिर के बाल कटवाना जरूरी है।

7. मैदान अरफात की सीमा के अंदर ठहरना जरूरी है।

8. अरफात से सूरज डूबने से पहले नहीं निकलें।

9. कंकरियां मारते हुए, जूते, लकड़ि, जूते इत्यादि उपयोग न करें।

وَصَلَّى اللّٰهُ وَسَلَّمَ عَلٰى نَبِيِّنَا مُحَمَّدٍ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَصَحْبِهٖ أَجْمَعِيْنَ

फिर एक दो कदम और आगे चलें। और यह दुआ कहते हुये ह. उमर (र) की समाधि के सामने खड़े हों।- "अस्सलामु अलैक या उमर अमीरुलमोमिनीन व रहमतुल्लाहि व बरकातुह रदिअल्लाहु अन्क व जज़ाक अन उम्मति खैरा:"

फ़िर मस्जिद कूबा जायें और वहाँ निफल नमाज़ पढ़ें। इसी तरह "बकीअ" के कब्रस्थान जायें और ह.उस्मान (र) की समाधि के सामने खड़े हो कर सलाम पढ़ें। "अस्सलामु अलैक या उस्मान अमीरुल मोमिनीन व रहमतुल्लाहि व बरकातुह रदिअल्लाहु अन्क व जज़ाक अन उम्मति मुहम्मदिन खैरा।"

जबल उहुद की ओर जायें। और वहाँ ह. हम्जाः (र) और उनके साथ शहीद होनेवालों की कब्रों की ज़ियारत करें। उन पर सलाम पढ़ें और उनके लिये अल्लाहताला से रहमत और रज़ा की दुआ करें।

ध्यान में रखें

1. मदीना मुनव्वराः में ऊपर लिखे हुये स्थानों के अलावा किसी जगह की संदर्शन करना सवाब का सबब नहीं।
2. समाधियों से तबर्रुक हासिल करना या मुर्दों को पुकारना जायज़ नहीं।
3. नबी (स) की समाधि की ओर दिशा करके

मदीना नगर में मस्जिद नबवी (स) की ज़ियारत

हज से पहले या हज के उपरांत मास्जद नबवी (स) की सदर्शन के लिये मदीना जायें। ताकि वहाँ नमाज़ अदा कर सकें। क्योंकि वहाँ नमाज़ पड़ने से बाकी मस्जिदों की निस्बत हर नमाज़ हज़ार बार ज़्यादा सवाब मिलता है। सिवाय मस्जिदे हराम के क्योंके वहाँ एक लाख नमाज़ का सवाब मिलता है। जब मस्जिद नबवी (स) में जायें तो दो रकअत तहय्यतल मस्जिद पढ़ें। अगर फ़र्ज नमाज़ खड़ी हो रही हो तो उसमें मिल लें।

फिर नबी (स) की समाधि पर जायें। और उसके सामने खड़े होकर यह दुआ पढ़ें।

"अस्सलाम अलैक अय्युहन्नबिय्यु व रहमतुल्लाहि व बरकातुहु व सल्लल्लाहु अलैक व जज़ाकअन उम्मतिक खैरन"।

फिर दो कदम दायें और चलें और यह दुआ पढ़ते हुये ह. अबूबकर सिद्दीक (र) की समाधी के सामने खड़े हों - "अस्सलामु अलैक या अबाबकर (र) खलीफत रसूलुल्लाहि (स. अ.) व रहमतुल्लाहि व बरकातुह रदियल्लाहु अन्क व जज़ाक अन उम्मति मुहम्मदिन खैरा"।

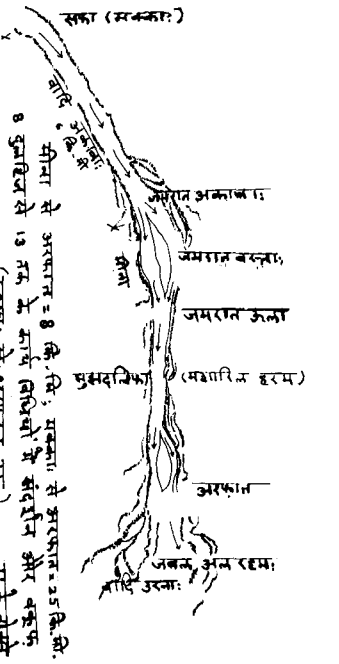

सफ़ा (मक्का:)
वादि अक़बा: 6 कि.मी
जमरात अक़बा:
मीना
जमरात वस्ता:
जमरात ऊला
मुज़दलिफ़ा (मशारिल हरम)
अरफ़ात
जबल अल रहम:
वादि उरना:
मीना से अरफात = 8 कि.मि ; मक्का से अरफात = 25 कि.मी.
8 ज़ुल्हिज से 13 तक के कार्य विधियों में संदर्शन और वकूफ़
(कअक: से अरफ़ात तक) – ए.के.तोमर

सिर्फ़ मर्दों के लिए :-

1. कमीज़, पगड़ी, टोपि, रुमाल, शलवार बंद जूता न पहनें। अगर चादर न मिल सका तो शलवार पहन सकता है। और चप्पल न मिल सकने से बंद जूता उपयोग कर सकता है।

2. अपना सिर टोपि या कपड़े से न ढांपे। छाता, गाड़ि की छत, पेड़ या खैमे से साथा उपलब्ध कर सकता है। सामान, गठरि इत्यादि सिर पर उठा ले सकता है।

3. बनियान, निक्कर, शेरवानि नहीं पहना चाहिये। अंगूठी, चश्मा, जूता, घड़ी, बेल्ट इत्यादि का उपयोग कर सकता है। निस्संदेह उसमें सिलाई ही क्यों न हो। अंग को खुजलाने से अगर बाल गिर जाएं तो कोई हर्ज नहीं।

औरत के लिए :-

1. पूरा चेहरा न ढांपें। बुर्का न पहनें। सुन्नत यही है कि औरत अपना चेहरा खुला रखें। अगर पराई मर्द देखते हों तो हर हालत में चेहरा ढांपना ज़रूरी है।

إِنَّهُ سَمِيعٌ مُجِيبٌ وَهُوَ حَسْبُنَا وَنِعْمَ الْوَكِيلُ

ज़रूरी बातें

हज और उम्रः का इहराम धारणी के लिएः-

1. नमाज़ जमाअत के साथ, निर्दिष्ट समय पर पढ़ें।
2. बुराई, अपराध, झगड़ा, फ़साद, चुग़लख़ोरी और अनावश्यक बातों से परहेज़ करें।
3. मुसलमानों को अपने बात और क्रिया से कष्ट, नष्ट न दें। चाहे वह इन पवित्र स्थान में हों या किसी दूसरी जगह।

मर्द और औरत : दोनों के लिएः-

1. नाखुन और बाल न काटें लेकिन कांटा या अन्य नुकीली चीज़ लग जाय तो निकाल सकता है चाहे उस से ख़ून ही क्यों न निकल आये।
2. इहराम बांधने के उपरांत अंगांगों पर, कपड़े या स्वास्थ वस्तुओं में, पानीय चीज़ों में सुगंध उपयोग न करें। सुगंधित साबुन न बापरें।
3. शिकार, क़त्ल न करें।
4. बीवि से संभोग, चुंबन, छेड़-छाड़ न करें।
5. न अपने निकाह का निर्णय करें। और न किसी दूसरे का। न अपने लिए किसी स्त्री को शादि का संदेशा भेजें। और न किसी दूसरे के लिए।
6. हाथों में दस्ताने न पहनें।

अरफात
मुसदलिफा
मीना
मक्का
वकूफ (ठहरना)
प्रवास (वाहन से)
तवाफ इफ़ादा
तवाफ विदा
8
9
10
11
12
13
(हज कार्य विधि संक्षिप्त में)

चलें। इसके साथ ही आप का हज संपूर्ण हो गया। जब अपने घर को वापसी का इच्छा करें तो कअबः के सात चक्कर लगाकर तवाफ़ विदा करें।

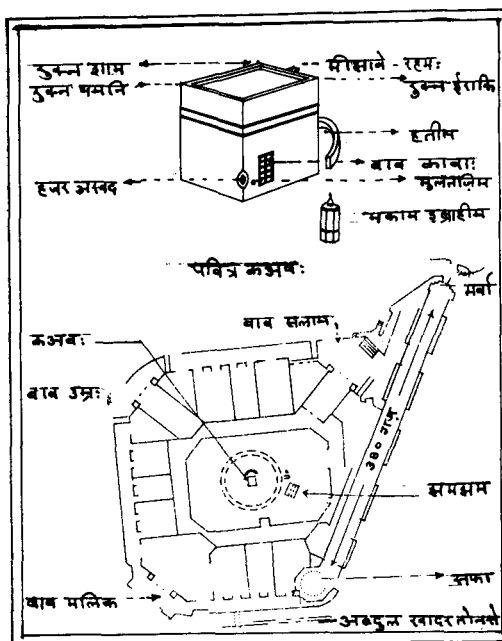

(औरत से संभोग सहित)। यह चार कार्य अगर आसानि है तो कर लें (क्रम प्रकार)। अगर कोई कार्य आगे या पीछे हो जाए, तो कोई हर्ज नहीं। तवाफ़ के उपरांत मीना चलें। मग़्रिब से पहले तीनों जमरात को क्रमप्रकार (जम्रः ऊला जो अरफ़ात की ओर खड़ा है से आरंभ, फिर जम्रः वस्तः जो बीज में है, आखिर में जम्रः अक़्बः जो मक्का की ओर है) मारें। रात वहीं रहें। प्रार्थना, उपासना, स्तुति और स्तोत्र करते रहें।

चतुर्थ दिवस - दुल्हिज 11

दिन भर कुरान पठन, स्तुति और स्तोत्र में मग्न रहें। मग़्रिब से पहले तीनों जमरात को कंकरियाँ मारें। छोटे जम्रः और जम्रः वस्ता को कंकरियाँ मारने के उपरांत क़िब्लाभिमुख खड़े हो कर अल्लाह से दुआ माँगे।

पंचम दिवस - दुल्हिज 12

चतुर्थ दिवस का कार्यक्रम दुहरायें। मग़्रिब से पहले अपना काम निपटा कर, चाहें तो आप मीना से कअबः जा सकते हो। (अफ़ज़ल यह है कि और एक दिन रुक जाएं और दुल्हिज 13 के दिवस मग़्रिब से पहले तीनों जमरात को कंकरियाँ मारने का काम निपटाने के बाद कअबः

भीड़ के हेतु नहीं मार सकते - इस कारण वे अर्थ रात्रि बीतने के उपरांत मीना को कूच कर सकते हैं।

तृतीय दिवसः दुलहिज 10

मीना पहुँचकर निम्न लिखत कार्य करें :-

1. जम्रः अकाबा जो बड़ा स्तंभ है और मक्का के ओर पड़ता है - उसको "अल्लाहु अक्बर कहते हुए पाक के बाद पाक कुल 7 कंकरियाँ मारें।

2. प्राणिबलि करें। उसका माँस खुद भी खा लें। और गरीबों में बाँट दें। (प्राणि बलि करना तमत्तउ और किरान हाजि पर वाजिब विधि है। इहराम खोल दें। सिले कपड़े पहन लें। इसके साथ ही, औरत से संभोग के अतिरिक्त बाकि चीज़ जो इहराम के कारण निषिद्ध थे वे सब सिंधु हो गयीं।

4. अब आप मक्का जाकर तवाफ़ इफ़ादा करें। (या मीना में ही रहकर कंकरियाँ मारने के कार्यक्रम जो 11, 12 और (या) 13 दुलहिज के दिवसों में करनी हैं उनको समाप्त कर मीना से निकल सकते हो) तमत्तउ हाजि हज की सई (सफ़ा-मर्वा के चक्करों को। इफ़ाद और किरान हाजि, जो तवाफ़ कदूम (प्रथम) के नंतर अगर सई न किये हों तो वह अब करलें। इस के साथ ही आप के लिए पूरी चीज़ें जो अब तक इहराम के कारण निषिद्ध थे, अब सिंधु हो गयीं।

हज कैसे करें ?

प्रथम दिवस: दुलहिज ८

तमत्तउ हाजि प्रातःकाल अपने निवास स्थान से ही इहराम बांध ले। इफ़राद और किरान हाजि तो इहराम से होंगे ही;आवश्यकता हो तो पहले स्नान कर लो। या वज़ू कर लें। और इस प्रकार कहें "अल्लाहुम्म लब्बैक हज्जन"। (ए अल्लाह, मैं हज के लिए हाज़िर हूं।) और तलबिय्यः पढ़ें। और मीना चलें। प्रवास में तलबिय्यः दुहराते रहें। मीना में ज़ुह्र, अस्र, मग़्रिब इषा और फ़ज्र की नमाज़ें बिना जमा किये कस्र (चार के बदले में दो रकअत) पढ़ें।

द्वितीय दिवस : दुलहिज ९

सुब्ह होते ही मीना से अरफ़ात निकल पड़ें। ज़ुह्र और अस्र की नमाज़ जमा और कस्र पढ़ें। और यहाँ सुरज डुबने तक ठहरें। कअबः अभिमुख खड़े हो कर खूब दुआ और ज़िक्र करें। जब अंधकार पसरने लगे तो अरफ़ात से मुज़्दलिफ़ा की ओर चलें। यहाँ पर मग़्रिब और इषा की नमाज़ जमा व कस्र पढ़ें। रात वहीं बीतें। फ़िर फ़ज्र की नमाज़ के कुछ समय बाद तक ठहर कर दुआ, ज़िक्र, स्तुति और स्तोत्र करें। और मीना चल पड़ें। जहाँ कंकरियाँ मारने का कार्य विधी होनी है। (कमज़ोर, बूढ़े, बीमार, औरत और बच्चे कंकरियाँ

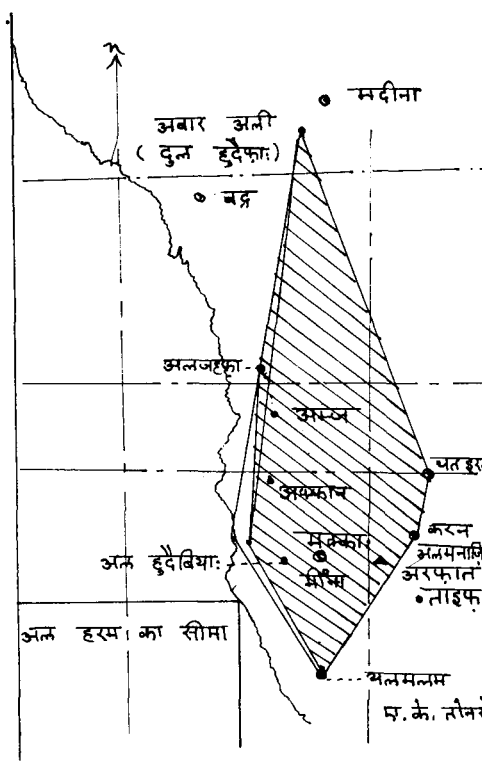

मदीना
अबार अली
(दुल हुदैफाः)
बद्र
अलजहफा
मक्का
करन
अलमनाज़िल
अरफात
ताइफ
अल हुदैबियाः
अल हरम का सीमा
यलमलम
ए.के. तोनसे

प्रथम तीन चक्कर छोटे-छोटे कदम उठाते हुए, कंधे उचकाते हुए रमल करें। याद रखें कि इस के बाद किसी तवाफ़ में ऐसा चलना नहीं है।

तवाफ़ से मुक्त होते ही वहीं मकाम इब्राहिम के पीछे दो रकअत नमाज़ पढ़ें। अगर वहाँ भीड़-भाड़ है तो और किसी भी जगह पढ़ लें।

और वहाँ से सफ़ा पहाड़ के ओर चल पड़ें। सफ़ा से मर्वा (जो लगभग 380 गज़ दूरी पर है) तक सात बार चक्कर लगायें। अंतिम चक्कर मर्वा में समाप्त होगा। हर चक्कर में वहाँ पर लगे हरे रंग के स्थंभों के दरमियान तेज़ चलना चाहिए। अंतिम चक्कर के बाद मर्वा पहाड़ पर काअबः को देखते हुए हाथ उठा कर स्तुति, स्तोत्र, दुआ और ज़िक्र करें। और सिर का बाल कटवाना चाहिए। इस के साथ ही आपका उम्रः पूर्ण हो गया। अब इहराम से मुक्त हो अपने दैनिक प्रयोगी कपड़े पहन लें।

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَلَا نَعْبُدُ اِلَّآ اِيَّاهُ
مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ وَلَوْ كَرِهَ الْكٰفِرُوْنَ ؕ

कोई पूज्य नहीं अल्लाह के सिवा, किसी दूसरे की पूजा हम नहीं करते। हमारी उपासना सिर्फ़ उसीके लिए खास है चाहे काफ़िरों को कितनी ही नापसंद हो।

प्रवास में तलबिय्या दुहराते रहें।

लब्बैक अल्लाहुम्म लब्बैक।
लब्बैक लाशरीक लक लब्बैक।
इन्नल हम्द वन्निअमत लकवल मुल्क।
ला शरीक लक।

मैं हाज़िर हूँ ए अल्लाह, मैं हाज़िर हूँ। तेरा कोई शरीक नहीं। मैं हाज़िर हूँ। बेशक सब चीज़ें तेरे ही प्रदान हैं। सब शुक्र तेरे ही लिए हैं। सब का प्रभु तू ही है। तेरी प्रभुत्व में कोई भागीदार नहीं है।

जब आप मक्का नगर प्रवेश करें तो मस्जिद हरम में बिस्मिल्लाह कहकर अंदर कदम रखें। और सीधे अंदर का जो विशाल प्राणांगण में चलें। उसके मध्य में कअबः भवन विराजमान है। इस भवन के एक कोने में दो दीवारों के बीच हजर अस्वद (काला पत्थर) जो जुड़ा हुआ है, वहाँ से उम्रः का तवाफ़ (चक्कर) आरंभ करें। और कअबः के गोल घूमते हुए फ़िर वही स्थान पर आऐं। इस प्रकार 7 चक्कर काटें। प्रति समय हजर अस्वद से निकलते हुए उसकी दिशा में हाथ से संकेत करते हुए "अल्लाहु अक्बर कहें। हो सके तो हजर अस्वद का चुंबन लें। तवाफ़ के

मुसलमान हज और उम्रः कैसे करें ?

—हज और उम्रः इन कार्यों को इस तरह करना चाहिये जैसा रसूल (स.अ.) से साबित है। अल्लाह का कहना है "ए मेरे रसूल, लोगों से कह दो अगर अल्लाह से प्यार रखते हो तो मेरी पैरवी करो। वह तुम से प्यार करेगा; और तुम्हारे अपराध क्षमा करेगा"।

हज की विधियों में से हज तमत्तुअ सब से अच्छा है। जिस के लिए जो अपने साथ बलि का प्राणि न ले जा रहा हो। इसका नियम यह है कि हज के महीनों में जो शव्वाल से आरंभ होते हैं, उम्रः करने के पश्चात इहराम खोल देना चाहिये। और ८ जुलहिज को पुनः इहराम बांधे।

उम्रः कैसे करें ?

जब आप मीकात पर पहुँचे और इहराम बांधने का निर्णय करें तो पहले पानि से स्नान कर लें। या वज़ू कर लें। (मीकात मक्का प्रदेश का सीमा बिंदु है जिसे पार करने के लिए इहराम में होना ज़रूरी है।) उसके पश्चात एक चादर (जिस में सिलाई न हो) कमर पर लपेट लें। (औरत आडंबर व अलंकार के बिनः हर कपड़े में इहराम बांध सकती है।) और दूसरी कंधों पर ओढ़ लें। इसके उपरांत तलबियः कहें। "लब्बैक उम्रः" (ए अल्लाह, मैं उम्रः के लिए हाज़िर हूँ। इफ़राद हाजी "लब्बैक हज्जन" कहें।

जबल हिंदि
मक्का
हरम
6.50 कि.मी.
n
जबल अरफात
जबल रहमत
अरफात मैदान
निमरः
मास्जिद
जमरः अकाबा
जमरः वसता:
पहला जमरः
मास्जिद अलखैफ
मीना
मुजदलिफा
3.5 कि.मी.
3 कि.मी.
2 कि.मी.
10 कि.मी.
हज के दौरान प्रवास और ठिकाना. 1, 2 और 3.
= रुकने का प्रदेश
मक्का से अरफात = 25 कि.मी.
—ए.के.तोनसे

इब्राहीम (अ) और उनके पुत्र इसमाईल (अ) के मौत के कुछ ही सदियों में ये लोग अपने पूर्विकों की शिक्षा और पध्धति सब भूल भाल गये। धीरे धीरे उनमें गलत प्रथा आ गयीं। तौहीद की दावत के बदले बुत परस्ति का प्रचार होने लगी।

आखिरकार करीब 14 सदियों पहले अल्लाह ने वहीं एक रसूल (स) को भेजा, जो उन्हीं में से एक थे। जिन्हों ने कअबः में रखे हुआ सब बुतों को नाश कर दिया। और फ़िर वही तालीम, तरीके और कार्यों को प्रारंभ किया गया जो इब्राहीम (अ) ने आरंभ किया था। जब से आज तक हज अपनी असलि रूप में हो रही है। इतिहास खुद इस बात का गवाह है।

रहा हज का फल, अल्लाह का कहना है "लियशहदू मनाफ़िअ लहुम", (ताकि लोग यहां आकर देखें कि इस हज में उनके लिए कैसे फ़ायदे हैं। खुद हज करके उन अनगिनत फ़ायदों को देखो जो इस उपासना में छिपे हैं।

अब कहना है इस छोटे से रिसाले की आप बीती इसमें हज, उम्रः और मदीना संदर्शन के इच्छुक भाइयों के लिए जिन बातों की ज़रूरत है सिर्फ़ उन्हीं को नेक भावना और भलाई की इच्छा से और अल्लाह के इस आज्ञा की पालन में तैयार किया है: "नसीहत कीजिए, बेशक नसीहत मोमिनों को नफ़ा देगी"।

— अब्दुल खादर तोनसे

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

मुसलमान भाइयो!

हज का अर्थ अरबी भाषा में संदर्शन का इच्छा करना है। हज में चूँकि हर दिशा से लोग कअबः की दर्शन करने का संकल्प करते हैं, इसलिए इसका नाम हज रखा गया। चार हज़ार वर्षों से पूर्व इसमाईल (अ) और उनके पिता इब्राहीम (अ) ने मिलकर मक्का में कअबः की बुनियाद डाली और अरब के कोने में इस्लाम की शिक्षा फैलायी। यह भवन सिर्फ एक प्रार्थना घर ही नहीं बल्कि प्रथम दिन से ही इसको इस्लाम की विश्व आंदोलन की दावत और मार्गदर्शन का केंद्र घोषित किया गया। और उसकी उद्देश यह रखी थी कि एक खुदा को मानने वाले हर जगह से खिंच कर यहाँ इकट्ठा हुआ करें। मिलकर खुदा की उपासना करें। और इस्लाम का पैगाम लेकर फिर अपने वतन वापस चलें। यही सिस्टम था जिसका नाम हज रखा गया। कुरआन में उल्लेख है:- "सच ही है पहला घर जो लोगों के लिए निर्णय किया गया वही जो मक्का में बना, पुण्य-वाला और सब दुनियावालों के लिए हिदायत का केंद्र। इसमें अल्लाह की खुली हुई संकेत है, इब्राहीम (अ) की जगह है और जो इसमें प्रवेश हो जाता है उसको शांति मिल जाती है"।

١١٣

دليل الحاج والمعتمر

وزائر مسجد الرسول ﷺ

إعـداد

الرئاسة العامة للبحوث العلمية والإفتاء

باللغة الهندية

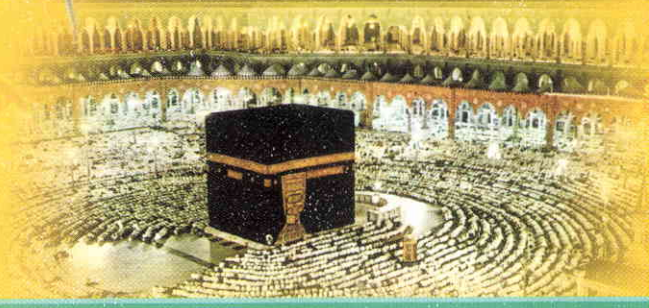

طبع على نفقة الفقير إلى عفو الله ورضاه غفر الله له ولوالديه ولأهله ولأولاده وللمسلمين
هذا الكتاب وقف لله تعالى يوزع مجانا ولا يباع